महर्षि वाल्मीकि और रामायण का सांस्कृतिक चिन्तन

सवाई सिंह
व्याख्याता - रा.उ.मा.वि., तिंवरी, जोधपुर
शोधार्थी (संस्कृत-विभाग)
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

नमः सर्वोपजीव्यं तं कवीनां चक्रवर्तिनम्।
यस्येन्दुधवलैः श्लोकैर्भूषिता भुवनत्रयी।।
स वः पुनातु वाल्मीकेः सूक्तामृतमहोदधिः।
ओङ्कार इव वर्णानां कवीनां प्रथमो मुनिः।।

भारतीय काव्य-परम्परा का प्रारंभ यदि किसी महाकवि से माना जाए तो वह हैं महर्षि वाल्मीकि। रामायण न केवल साहित्यिक दृष्टि से अमूल्य है, अपितु भारतीय संस्कृति, परम्परा और जीवन-मूल्यों का भव्य दर्पण भी है। महर्षि वाल्मीकि ने मानव जीवन के आदर्श स्वरूप को काव्य के माध्यम से प्रस्तुत किया। उन्होंने श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में चित्रित कर यह संदेश दिया कि समाज और संस्कृति की उन्नति धर्म, सत्य और मर्यादा पर आधारित होती है।

कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम्।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम्।।

भारतीय संस्कृति की गाथा सहस्राब्दियों से महर्षियों और कवियों के कण्ठ से गूंजती रही है। महर्षि वाल्मीकि ने केवल काव्य ही नहीं रचा, अपितु भारतीय समाज को धर्म, मर्यादा और आदर्श का जीवन-दर्शन प्रदान किया। उनके द्वारा रचित रामायण केवल कथा ही नहीं, भारतीय संस्कृति की आत्मा है। संस्कृत साहित्य के इतिहास में वाल्मीकि को आदिकवि कहा गया है और उनकी रचना रामायण को प्रथम महाकाव्य। उनकी वाणी कोकिल की भाँति मधुर और जीवनोपयोगी है।

महर्षि वाल्मीकि का जीवन और आत्मपरिवर्तन

प्रचलित कथाओं के अनुसार महर्षि वाल्मीकि का प्रारम्भिक जीवन रत्नाकर नामक डाकू के रूप में बीता, परन्तु नारद मुनि के उपदेश और तपस्या के प्रभाव से उनमें आध्यात्मिक परिवर्तन हुआ। दीर्घकालीन साधना में वे वल्मीक (चींटियों के टीले) से ढक गये और तब से 'वाल्मीकि' कहलाए।

आदिकवि और काव्यजन्म

वाल्मीकि को आदिकवि इसलिए कहा गया क्योंकि उन्होंने संस्कृत में प्रथम श्लोकबद्ध महाकाव्य की रचना की। क्रौञ्चपक्षी का रुदन देखकर उनके हृदय से जो करुणा फूटी, वही प्रथम श्लोक के रूप में प्रकट हुई-

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥

इस प्रकार करुणा ही काव्य का बीज बनी- शोकः श्लोकत्वमागतः।

रामायण की संरचना और विषयवस्तु

वाल्मीकि रामायण 24,000 श्लोकों का महाकाव्य है, जो सात काण्डों में विभक्त है-

1. **बालकाण्ड -** प्रभु श्रीराम का बाल जीवन, विश्वामित्र आश्रम, अहल्या उद्धार, धनुष भंग, सीता जी से पाणिग्रहण।
2. **अयोध्याकाण्ड -** वनवास, राम-वियोग में राजा दशरथ का प्राण-त्याग।
3. **अरण्यकाण्ड -** शबरीवृत्तान्त, शूर्पणखा, सीता-हरण, जटायु-रावण युद्ध।
4. **किष्किन्धाकाण्ड -** सीता की खोज, सुग्रीव-हनुमान संगति, बालि वध।
5. **सुन्दरकाण्ड -** हनुमानजी का लंका-गमन, अशोक वाटिका, सीता दर्शन, लंका दहन।
6. **युद्धकाण्ड -** रावण वध, अयोध्या प्रस्थान, गुरु वशिष्ठ द्वारा श्रीराम का राज्याभिषेक।
7. **उत्तरकाण्ड -** सीता-वनगमन, महर्षि वाल्मीकि आश्रम, लव-कुश चरित, अश्वमेध यज्ञ।

रामायण में आदर्शों की प्रतिष्ठा

महर्षि वाल्मीकि ने रामायण के पात्रों के माध्यम से जीवन के शाश्वत आदर्श स्थापित किए। ये पात्र केवल कथा-नायक नहीं, अपितु ऐसे मानवीय मूल्य हैं जो समाज को दिशा देते हैं -

राम - धर्म और मर्यादा के साक्षात् स्वरूप

**रामो विग्रहवान्धर्मः साधुः सत्यपराक्रमः।
राजा सर्वस्य लोकस्य देवानामिव वासवः।।**

राम में सत्य, साहस, त्याग और करुणा का अद्वितीय संगम मिलता है। वे न केवल एक आदर्श पुत्र और आदर्श राजा हैं, अपितु सामान्य मानव के रूप में भी उन्होंने कठिनाइयों का सामना मर्यादा और धैर्य से किया। राम का व्यक्तित्व यह सिखाता है कि धर्म किसी कल्पना का नहीं, अपितु व्यवहार का नाम है। इस प्रकार वाल्मीकि ने राम को धर्म का मूर्त रूप माना है।

सीता - पतिव्रता और सहनशीलता की मूर्ति

वाल्मीकि ने सीता के चरित्र में नारी की आदर्श छवि प्रस्तुत की है। सीता त्याग, धैर्य और नारी-गरिमा का प्रतीक हैं। वनवास के कष्ट, रावण का छल और अग्निपरीक्षा जैसी परिस्थितियों में भी उन्होंने धैर्य और धर्म का पालन किया। इससे नारी के प्रति भारतीय संस्कृति का दृष्टिकोण स्पष्ट होता है कि नारी केवल गृहस्थी का आधार नहीं, अपितु साहस और आस्था की धुरी भी है।

लक्ष्मण - भ्रातृभक्ति और सेवा का आदर्श

**देशे देशे कलत्राणि, देशे देशे च बान्धवाः।
तं तु देशं न पश्यामि, यत्र भ्राता सहोदरः।।**

लक्ष्मण का चरित्र भ्रातृ-प्रेम और त्याग का सर्वोतम उदाहरण है। लक्ष्मण का यह दृष्टिकोण भारतीय परिवार व्यवस्था की मूल भावना को प्रकट करता है। उन्होंने पत्नी और सुख-सुविधाओं का त्याग कर राम की सेवा को सर्वोपरि माना। उनका जीवन यह सिखाता है कि भाई-भाई का संबंध केवल रक्त का नहीं, अपितु आत्मीयता और समर्पण का भी होता है।

हनुमान - भक्ति और पराक्रम का प्रतीक

**यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम्।
वाष्पवारि परिपूर्णलोचनं मारुतिं नमतः राक्षसान्तकम्।।**

हनुमान का चरित्र अद्वितीय है। वे शक्ति, बुद्धि और पराक्रम से युक्त होने पर भी अहंकार रहित, केवल प्रभु-सेवा में समर्पित रहते हैं। हनुमान ने यह शिक्षा दी कि भक्ति केवल भावनात्मक नहीं, अपितु कर्मशील भी होनी चाहिए। उनका पराक्रम और सेवा भाव भारतीय संस्कृति में आदर्श भक्ति का प्रतिमान है।

भरत - त्याग और भ्रातृनिष्ठा का अनुपम उदाहरण

भरत का चरित्र रामायण में त्याग और भ्रातृ-प्रेम की चरम परिणति है। उन्होंने माता कैकेयी द्वारा प्राप्त राज्यसिंहासन को ठुकराकर राम के चरणपादुकाओं को राजसिंहासन पर स्थापित किया। स्वयं साधु-सा जीवन जीते हुए, केवल प्रतिनिधि के रूप में शासन किया। भारतीय संस्कृति में भरत का यह आदर्श संदेश देता है कि सत्ता से बड़ा भाई का स्नेह और धर्म होता है।

इस प्रकार रामायण में वाल्मीकि ने ऐसे पात्र गढ़े हैं, जो युग-युगांतर तक जीवन के आदर्श बने रहते हैं।

भारतीय संस्कृति और लोकजीवन पर प्रभाव

वाल्मीकि रामायण केवल संस्कृत साहित्य में ही नहीं, अपितु सभी भारतीय भाषाओं की रामकथा-परम्परा का आधार बनी। तुलसीदास की रामचरितमानस आदि इसकी ही प्रेरणा से रचे गए। इस ग्रंथ का प्रभाव शताब्दियों से समाज पर विभिन्न रूपों में दिखाई देता है। रामायण ने समाज में धर्म, मर्यादा, भक्ति और आदर्श का संस्कार किया।

(1) काव्य का आद्य स्रोत - करुणा और भावुकता

रामायण का प्रारंभ ही वाल्मीकि की करुणा से हुआ। एक क्रौंच-वध देखकर उनके हृदय में जो वेदना जागी, उसने श्लोक का जन्म कराया। इससे स्पष्ट है कि भारतीय साहित्य का मूल स्रोत करुणा और संवेदनशीलता है। यही भावुकता समाज को मानवीय संवेदना से जोड़े रखती है।

(2) आदर्शों की प्रतिष्ठा

राम को पुरुषोत्तम, सीता को पतिव्रता और हनुमान की भक्ति को श्रेष्ठ मानकर भारतीय समाज ने आदर्श जीवन का मार्ग पाया। यह प्रभाव इतना व्यापक है कि लोकजीवन में भी राम-सीता के नाम पर दाम्पत्य निष्ठा और भाई-भाई के संबंधों में लक्ष्मण-भरत जैसे आदर्श का उदाहरण दिया जाता है।

(3) साहित्यिक योगदान

वाल्मीकि ने श्लोकबद्ध महाकाव्य परम्परा का सूत्रपात किया। परवर्ती कवियों ने इसी आधार पर संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य का विकास किया। अवधी में तुलसीदास की रामचरितमानस सहित तमिल, तेलगु, बांग्ला, मराठी, उड़िया और अन्य भाषाओं की रामकथाएँ इसी परम्परा का विस्तार हैं।

(4) सांस्कृतिक प्रभाव

रामायण केवल ग्रंथ नहीं रही, अपितु भारतीय समाज की सांस्कृतिक परंपराओं का अंग बनी। विवाह, त्योहार, लोकगीत, नाट्य, चित्रकला और मूर्तिकला - सभी में रामकथा की छाप देखी जा सकती है। रामलीला जैसी लोक-नाट्य परंपरा ने इसे जन-जन तक पहुँचाया।

(5) सार्वभौमिक संदेश

रामायण का मूल संदेश है - धर्म, सत्य और मर्यादा। यह संदेश केवल भारत तक सीमित नहीं, अपितु पूरे विश्व के लिए प्रासंगिक है। रामायण का यह सार्वभौमिक चरित्र ही इसे अमर बनाता है।

(6) भाषा की सरलता और माधुर्य

वाल्मीकि की संस्कृत सहज, प्रवाहमय और मधुर है। इसीलिए उनकी कृति केवल विद्वानों तक सीमित नहीं रही, अपितु लोकमानस तक पहुँची और रामकथा जनसाधारण की धरोहर बन गई।

(7) रससिद्धि

रामायण में करुण, वीर, शृंगार और शान्त रस की अद्भुत अभिव्यक्ति है। इससे यह कृति केवल उपदेशात्मक न रहकर कलात्मक भी बनती है।

(8) इतिहास और आस्था का संगम

रामायण ऐतिहासिक स्मृति और धार्मिक आस्था दोनों का संगम है। यह केवल कथानक नहीं, अपितु भारतीय समाज की सामूहिक चेतना का आधार बन गई।

(9) लोकपरम्परा पर प्रभाव

वाल्मीकि रामायण के आधार पर तुलसीदास की रामचरितमानस तथा अन्य अनेक भाषाओं में रामकथाएँ रची गईं। इस प्रकार रामायण ने भारतीय लोकजीवन को निरंतर संस्कारित किया।

वाल्मीकि की रामायण में पात्रों के माध्यम से आदर्शों की प्रतिष्ठा हुई और इन आदर्शों ने भारतीय संस्कृति को दिशा दी। करुणा, धर्म, मर्यादा, भक्ति और सत्य के ये सूत्र आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने प्राचीन काल में थे। यही कारण है कि रामायण केवल एक साहित्यिक महाकाव्य नहीं, अपितु भारतीय जीवन और संस्कृति का नैतिक संविधान है।

रामायण का परवर्ती साहित्य पर प्रभाव

वाल्मीकि-कृत रामायण को 'आदिकाव्य' कहा जाता है। यह केवल धार्मिक-आध्यात्मिक महाकाव्य नहीं, अपितु काव्य-लक्षणों, नायक-नायिका के चरित्र-चित्रण, रस, अलंकार और कथा-संरचना का भी आदर्श है। परवर्ती साहित्य में इसका गहन प्रभाव दिखाई देता है। आगे के कवियों ने इसे आधार-ग्रन्थ मानकर या तो कथा-रूपांतरण किया, या नाटकीय प्रस्तुति दी, अथवा शैलीगत प्रेरणा ली।

(क) नाट्यरचनाएँ

1. भास द्वारा रचित 'प्रतिमानाटक' और 'अभिषेकनाटक' में रामकथा के प्रसंगों का जीवंत चित्रण है।

2. भवभूति द्वारा रचित 'महावीरचरितम्' में रामकथा को अपने ढंग से रूपायित किया, जहाँ राम के पराक्रम और नीति को उभार कर दिखाया गया तथा 'उत्तररामचरितम्' में उत्तरकाण्ड की घटनाएँ (सीता का वनगमन, लव-कुश, पुनर्मिलन) को करुणरसप्रधान ढंग से चित्रित किया गया।

स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा।।

3. मुरारि द्वारा रचित 'अनर्घराघवम्' रामायण पर आधारित प्रसिद्ध नाटक है, जिसमें राम के चरित्र की उदात्तता का प्रभावी चित्रण मिलता है।

(ख) महाकाव्य

1. कालिदास रचित 'रघुवंशम्' में रघुकुल के आदिपुरुषों का वर्णन करते हुए रामकथा को विशेष स्थान दिया।

शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्।
वार्द्धके मुनिवृत्तीनाम् योगेनान्ते तनुत्यजाम्।।

(ग) अन्य रचनाएँ

1. तुलसीदास रचित 'रामचरितमानस' (अवधी) वाल्मीकि रामायण की ही प्रेरणा पर आधारित है, जिसमें भक्ति-रस की प्रधानता है।

2. रामावतारम् या कम्बन-रामायण (तमिल), कृत्तिबास-रामायण (बंगला), रंगनाथ रामायण (तेलगु) और विभिन्न भाषाओं में रचित रामकाव्य मूलतः वाल्मीकि रामायण से उपजीव्य हैं।

3. संस्कृत में भी अनेक रामायणमाहात्म्य-ग्रंथ, स्तोत्र और टीकाएँ रची गईं, जिन्होंने रामकथा की महत्ता को और बढ़ाया।

महर्षि वाल्मीकि केवल रामकथा के गायक नहीं, अपितु मानवता के मार्गदर्शक हैं। उनकी रामायण एक सांस्कृतिक ग्रन्थ है, जिसमें धर्म, मर्यादा, आदर्श और भक्ति का समन्वय है। यह आदर्श-संरचना परवर्ती कवियों के लिए अनुकरणीय बनी।

रामायण केवल प्राचीन ग्रंथ नहीं है, अपितु वह आज भी भारतीय जीवन-दर्शन का मार्गदर्शन करती है। समाज में न्याय, समानता, नारी-गरिमा और मानव-समन्वय जैसे विचार इस महाकाव्य से प्रेरणा पाते हैं। आधुनिक युग में भी जब परिवार टूट रहे हैं और सामाजिक मूल्य शिथिल हो रहे हैं, तब वाल्मीकि रामायण हमें सांस्कृतिक एकता और मर्यादा का स्मरण कराती है।

महर्षि वाल्मीकि और उनकी रामायण भारतीय संस्कृति के जीवंत प्रतीक हैं। इसमें निहित आदर्श न केवल उस युग के लिए, अपितु आज और आने वाले कल के लिए भी प्रासंगिक हैं। वाल्मीकि का सांस्कृतिक चिन्तन मानव को धर्म, नीति और कर्तव्य का मार्ग दिखाता है तथा सम्पूर्ण विश्व को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का संदेश देता है।

सन्दर्भ -

क्षेमेन्द्रकृत 'रामायणमंजरी'
श्रीराम रक्षास्तोत्र - 34
बालकाण्ड-2.15
अयोध्याकाण्ड - 1.18
युद्धकाण्ड - 56.13
उत्तररामचरितम्-1.12
रघुवंशम् - 1.8